तः क्लास 28-5-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

बच्चों को आत्म-अभिमानी हो बैठना है। इसको कहा जाता है मन्मनाभव। इनका अर्थ है अपन को आत्मा समझ कर बैठो। देह सहित जो भी है उन सभी को भूल जाओ। हम सभी ब्रदर्स हैं। ब्रदरहुड है ना। तुम लोग भाई-दूज का महत्व भी मनाते हो। दिन मुकर्रर होता है। अर्थ कुछ भी समझते नहीं। अभी भाई2 का अर्थ बाप= बाप बैठ समझाते हैं। आत्मायें सभी ब्रदर्स हैं। सभी को वापस जाना है। सभी जब भाई2 बनते हैं तो फिर कोई भी ऐसा उल्टा सुल्टा वातावरण चल न सके। भाईयों का तो लव होता है ना। जो भाई सतयुग में आकर देवता पद पाते हैं। उन देवताओं में कितना प्यार होना चाहिए। बाप ने समझाया है भाई-बहन के रूप में भी देखा गया क्रिमनल आई छोड़ती नहीं हैं। माया का थप्पर लग जाता है। इसलिए बाबा ने फिर और ऊंची चोटी बताई कि एक दो को भाई2 समझो। हम आत्माओं को अभी वापस जाना है। अपन को भाई2 समझने से विरोध आद सभी निकल जाता है। तुम अपन को भाई2 समझ पुरुषार्थ करते हो। एक बाप को ही याद करना है। दुनिया में यह कोई भी नहीं जानते कि हम भाई2 हैं। इस शरीर से पार्ट बजा रहे हैं। अभी बाप ने कहा है पावन बन कर वापस जाना है। और जो भी देह के सम्बन्ध हैं उनको देखते हुये, साथ में रहते हुये सभी को भूलना है। आत्मा है फर्स्ट। पीछे है शरीर। घर में रहते हुये भाई2 समझना है। वह एक्टर्स नाटक में पार्ट बजाने आते हैं। तो कपड़े आद बदलते हैं। तुमको तो यह सारा शरीर बदलना है। तुम सभी भाई2 ठहरे। एक दिन की तो बात ही नहीं। भाई2 बनने लिए टाईम लगता है। अपन को आत्मा भाई समझ बाप को याद करो तो विकर्म=विनाश होंगे। भाई2 का आपस में कोई हिसाब-किताब न रहना चाहिए। पुराना हिसाब-किताब चुकुत। पुरानी दुनिया में जो भी कर्मभोग का हिसाब-किताब है वह सभी चुकत। सभी भाई से पुरुषार्थ में प्रधान बनते हो। टाईम तो बहुत नहीं है। टाईम बहुत ही थोड़ा है। समझो भी दे तो इस अवस्था में छोड़ने से बहुत ही उच्च जन्म मिलता है। उच्च पद पाने लिए ही मनुष्य दान पुण्य आद करते हैं। धर्मशाला, हास्पीटल आद बनाते हैं कि भगवान एवजा देवे। यह समझने की सहज बात ईश्वर अर्थ गरीबों को दान करते हैं। गरीबों को देते हैं नाम करते हैं ईश्वर का। श्री कृष्ण अर्पणम्। श्री कृष्ण अर्पणम्। है वह भी रांग। वह लोग कृष्ण को भगवान समझलेते हैं। श्रीकृष्ण अर्थ कहना रांग हो जाता। हिसाब-किताब तो सभी शिव बाबा देते हैं। श्री कृष्ण तो पुनर्जन्म लेने वाला है। जो अच्छा काम करते हैं ईश्वर अर्थ तो बुधि ऊपर में जाती है। किसकी बुधि जाती है? भाईयों की। शरीर एक बोता है। आंखों से देखने वाली, काम करने वाली आत्मा हैं। कहा भी जाता है महान आत्मा। महान परमात्मा नहीं कहा जा सकता। महान आत्मा, पूण्यात्मा कहा जाता हैं। अगर परमात्मा सर्वव्यापी है तो पाप परमात्मा कहे। पापात्मा क्यों कहते हैं। वह लोग फिर कहते आत्मा निर्लेप है। उन पर कोई लेप छेप नहीं लगता। परमात्मा सर्वव्यापी है अनेकानेक भर्ते हैं। माया को ही पत्थर बना दिया है। बाप कहते हैं मुझे बुलाते हैं परमात्मा आओ। तो मैं फिर सर्वव्यापी कैसे हो जाऊंगा। कितनारांग अक्षर हैं। क्या कुत्ते-बिल्ले को पतित-पावन कहें? कितना मुंझा है। सारा सुट ही मुंझा हुआ है। इतना मुंझा हुआ है जो बाप के सिवाय कोई समझा न सके। बाप आकर भक्ति का राज़ समझाते हैं। रचयिता और रचना को कोई भी नहीं जानते। कह देते परमात्मा सर्वव्यापी है। आगे ऋषि-मुनि फिर भी सतोप्रधान थे। उन्हों को घर-बार से वैराग्य आता था। निवृति मार्ग का धर्म ही ऐसा है। उनको जंगल में ही मज़ा आता था। कुम्भ आद के मेले पर कितने नांगे आद आ जाते हैं। बाप कहते हैं इन सन्यासी गुरु लोग आद को अभी समझाने में अजन देरी है। जब इन साधुओं को ज्ञान देंगे तो बड़ रेवलेशन हो जावेगा। उन्हों के शिष्य आद बिगड़ जावेंगे। कहेंगे क्या जन्म-जन्मान्तर तुम उल्टे सुनाते आये हो। क्योंकि यह है नम्बरवन भूल। एकज भूल है ना। बाप कहते हैं यह है बड़ी भक्ति मार्ग में कोई का भी कल्याण होता नहीं। कल्याणकारी मनुष्य होते ही हैं सतयुग में।

वाले मनुष्य रहते हैं कलियुग में। यहसमझने की बातें हैं। यह युनिवर्सिटी है। कालेज कहो, पाठशाला कहो। और जो भी सतसंग हैं उनको पाठशाला नहीं कहेंगे। यहपाठशाला है। पाठशाला में एमआबजेक्ट जरूर चाहिए। यहां का एमआबजेक्ट है यह बनना। भक्ति मार्ग में यह भी सत्यना0 की कथा सुनते थे ना। नर से ना0 बनने की। वह कथा कब किसने सुनाई थी। बाप ने नालेज दी थी। कथा इनको क्यों कहते हो क्योंकिपुरानी बात है। अभी तुम बच्चे समझते होगीता है सर्व शास्त्र मई शिरोमणि गीता। गाई थी भगवान ने। भारतवासी अपने आदी सनातनदेवी देवता धर्म को, कर्म को भूले हैं। सतयुग में जो पवित्र गृहस्थ आश्रम था, कलियुग में अपवित्र बन पड़े हैं। अभीपुकारते भी हैं हे पतित पावन आओ। हे सिताओं के भगवान। हम भक्त हैं। हमको आकर पावन बनाओ। भक्तों को यह भी पता नहीं हैं। देवताओं के आगे गाते हैं आप सर्व गुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी हो। हम विकारी हैं। हम निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। भिक्षा जाकर मांगते हैं। अभी वह तो जड़चित्र है। फिर जरूर चैतन्य भी होना चाहिए। अभी तो तुम हो पुरुषोत्तम संगम युग पर। तुम यह बनते हो। सतयुग त्रेता द्वापर ... में क्या2 होता हैयह जरूर मनुष्य ही जानेंगे। जनावर तो नहीं जानेंगे। अगर मनुष्य होकर भी नहीं जानते तोजनावर से भी बदतर कहेंगे। यह आसुरी रावणराज्य है ना। यह भी कोई समझते नहीं हैं कि हम असुर हैं। क्योंकि आसुरी पराये राज्य में हैं। इसलिए दुःखी हैं। यह है दुःखधाम। रावण है सभी का दुश्मन। इसलिए तो उनका एफ0जी0 बना जलाते हैं। (~~इसलिए दुःखी हैं। यह है दुःखधाम। रावण है सभी का दुश्मन। इसलिए तो उनका एफ0जी0 बना कर जलाते हैं।~~) परन्तु हिन्दुओं को यह भी पता नहीं कियह कौन [illegible] जलाते हैं। अक्षर भी कहते हैं राम राज्य और रावण राज्य। रामराज्य सतयुग में, रावण राज्य कलियुग में। अभी तो सभी असुर हैं। [illegible] कब विकार में नहीं जाते। गन्दा खाना नहीं खाते हैं। उन्हीं को कहा ही जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। तुम समझते हो यह हमारे पूज्य देवी-देवतायें थे ना। पूज्य इतने, पवित्र, पुजारी इतने बन्दे। यह भी समझ की बात है ना। यह पूज्य देवी-देवतायें होकर गये हैं। [illegible] ने ही पूरे 84 जन्म लिये हैं। भक्त तो समझते हैं कृष्ण ही कृष्ण है। जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण। राधे के [illegible] कहेंगे जिधर देखो राधे ही राधे। अभी परमात्मा तुम्हारे में भी तो हमारे में भी है। आखरीन भी वह है कौन। इन देवताओं के आगे भी जाकर कहते हैं आप निर्विकारी हम विकारी हैं। हमारे पर कृपाकरो। दया करो। अभी कृष्ण आद देवतायें कैसे याद करेंगे। वह तो पुनर्जन्म लेते हैं। वह क्या दया करेंगे। यहां यह सभी हैं पतित विकारी। साधु सन्त आद सभी विकार से पैदा होते हैं। साधु लोग भी जाते हैं स्नान करने। पावन [illegible] समझते हैं गंगा पतितपावनी हैं। और पतित पावन तो परम पिता परमात्मा है। या पानी की गंगा है। जो बाप पतित पावन है वही आकर पावन बनावेंगे। एक दो की तो बात ही नहीं। पावन भीसभी को बनाना चाहिए। सभी बाप को ही बुलाते रहते हैं। हे पतित पावन आकर पावन बनाकर पावन दुनिया में ले चलो। भारत में जब इनका राज्य था तो और कोईराजाई नहीं थी। देवी देवताओं का ही राज्य था। भारत जैसा पवित्र खण्ड और कोई बन नहीं सकता। यह तो बातें सभी बाप बैठसमझाते हैं। भक्ति मार्ग में माला तो बहुत फेरी है। जब से भक्ति शुरू की है माला फेरना शुरू की है। सतयुग में थोड़े ही सिमरेंगे। स्मृति तब है जब दुःख है। सतयुग में तो दुःख होता ही नहीं। गायन भी है दुःख में सुमिरण सब करे। सुख में करे [illegible] कौय। अभी तो रावण राज्य है। बाप ने जो आदी सनातन देवी देवताधर्म स्थापन किया उनका अभी नाम [illegible] भी नहीं हैं। यहज्ञान ही प्रायः लोप हो गया है। बाकी यह चित्र सिर्फ रहे हैं। शास्त्रों को भी झूठा [illegible]। कृष्ण कोई पतित पावन नहीं गाया जाता। कृष्ण तो 84 जन्म हैं काम चिक्षा पर चढ़ करसांवरा बन [illegible] इनको कहा ही जाता है आयरन एजेड। पत्थर बुधि दुनिया। पहले थी गोल्डेन एजेड। फिर 84 [illegible] पत्थर बुधि बने हैं। फिर पारस बुधि बनाने बाप को आना पड़ता है। पत्थर बुधियों का संग बारे।

पारस बुधियों का संग तोरो वह तो एक ही हैं। जन्म-मरण रहित परम पिता परमात्मा हैं। परम आत्मा यानि परमात्मा। वह है भी आत्मा। और कोई चीज़ नहीं। तुम सभी आत्माओं का बाप कौन है? परमपिता परमात्मा। जो आत्मारं पतित बनी हैउस परमपिता परमात्मा को याद करती हैं। जो सदैव ही पूज्य है। उनको याद करते हैं कि आकर हमको पावन बनाओ। कलियुग में सभी पतित हैं। एक भी पावन नहीं। सतयुग में फिर होते हैं सभी पावन। एक भी पतित नहीं। सभी को गति सदगति दे देते हैं बाप। पापात्मारं मनुष्य यहनहीं जानते हैं कि गति सदगति किसको कहा जाता है। मुक्ति कहा जाता हैशान्तिधाम को। तुम सतयुग में थे फिर 84 जन्म लिये हैं। सतयुग में सिर्फदेवी देवतारं ही रहते हैं। फिर पवित्र आत्मारं ऊपर से आती हैं। सतयुग में तो बहुत ही छोटा झाड़ था। फिर बृधि को पाकर कितना बड़ा हुआ है। अभी झाड़ की आयु आकर पूरी हुई है। इस मनुष्य सृष्टि रूपी का झाड़ का बीज है चैतन्य। जो ऊपर में रहते हैं। उनको ही सभी बुलाते हैं। हे परम पिता परमात्मा। हे बृक्षपति। यह वैराईटी धर्मों का उल्टा झाड़ है। जो भी मनुष्य तुम देखते हो सभी पार्ट धारी हैं। जो जिसका पार्ट होता है तब ही नीचे आना पड़ता है शरीर में। बाप कहते है मैं तो सदैव ऊपर में रहता हूं। सुखधाम स्थापन कर जाता हूं। फिर तुम सुखी रहते हो। आयु भी बड़ी। भारत की बात है। भारत की आयु एवरेज 150 बर्ष कहते हैं। क्योंकि पवित्र योगी थे। योगबल से पवित्र बने थे। वही है जो फिर पुर्जन्म लेते2 अभी देखो आयु कितनी कम हो गई है। जन्म लिया और मर पड़ते। अचानक काल खा जाता है। यह हैमृत्युलोक। सतयुग में काल होता ही नहीं। रावण राज्य ही नहीं। अकाले मृत्यु नहीं। वह ही है अमरलोक। उनको सा0 होता है समझते हैं बच्चा गर्भ में आया। विकार की वहां बात ही नहीं। सतयुग में गर्भ भी महल होता है। पाप कोई होता नहीं। जो सजा भोगे। यही तो रावण राज्य में गर्भजेल होता है। फिर तोबा भरते हैं। हम कब पाप नहीं करेंगे। परन्तु रावण राज्य में सभी जेल वर्डस ही होते हैं। पाप करते ही रहते। अभी वह पाप कैसे छूटे। भक्ति मार्ग में कहते हैं राम राम कहे तो राम मिल जावेगा। बाप कहते हैं यह माला आदि परना कोई काम का नहीं। रोज कोई 100माला, कोई 50 माला फेरते हैं। सीढ़ी फिर भी उतरते आते हैं। परन्तु पत्थर बुधि समझेंगे नहीं। क्योंकि स्वर्ग के लायक नहीं हैं। जो स्वर्ग में आये नहीं होंगे वह समझेंगे भी नहीं। बुधि में बैठेगा ही नहीं। देवी देवता धर्म वाले अभी हैं सिर्फ पतित बने हैं इसलिए देवताअपन कोकहलाते नहीं हैं। बाप समझाते हैं तुम पवित्र प्रवृति मार्ग वाले थे अभी फिर उसमें कौन ले जावे। बाप ही ले जाते हैं। बाकी सभी शान्तिधाम में रहते हैं। तो स्वर्ग नईदुनिया कौन स्थापन करेंगे। क्या मनुष्य? कब नहीं। मनुष्य को कब पतित पावन नहीं कह सकते। बाप को ही पतित पावन कहा जाता हैं। जो कब जन्म नहीं लेते हैं। बाप कहते हैं मैं साधारण पतित तन में आता हूं। जो गोरा सो अभी पतित बना है। अभी इनकी बवानप्रस्थ अवस्था है। तब मैं आया हूं। बूढ़े ही बानप्रस्त अवस्था लेते हैं। फिर गुरु के संग में जाकर रहते हैं। अच्छा यह भी सभी भूल गये हैं। हमने गुरु कौन सा किया है गुहस्थी या सन्यासी। सन्यासी गुरु है तोघर-बार छोड़ जाते हैं। हमारे हमजिन्स माताओं को,विधवा, बच्चों को आरफन बनाकर जाते हैं। यह बाप ही बैठ समझाते हैं। किनको समझाते हैं? जिनमें समझ कुछ भी नहीं हैं। वह तो घर-बार छोड़ते हैं। उनका धर्म ही अलग है। फिर भी रैली करेंगे। तुम भी बेसमझ से उनको गुरु करेंगे। जिन्हों ने विधवा और आरफन बनाया है। इससमय सभी आरफन और विधवायें हैं। कोई भी बाप को नहीं जानते। गाते भी हैंऊंच ते ऊंच भगवान। वह तो बाप ही ठहरे ना। उनको ही कहते हैं बाबा आकर पावन बनाओ। बाप कहते हैं मैं साधारण तन में आता हूं। भृकुटि के बीच में प्रवेश करतुमको ज्ञान देता हूं। ज्ञान सागर पतित पावन मैं ही हूं। मेरे में सारा ज्ञान हैकि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। मनुष्य पतित से पावन, पावन से पतित कैसे बनते हैं। रावण असुर बनाते हैं। राम देवता बनाते हैं। इन सभी बातों को सिवाय तुम बच्चों के और कोई भी समझते नहीं। तुम बनते हो ब्राह्मण कुल के। डिनायस्टी

नहीं है। देवताओं की डिनायस्टी है। राजाई है ना। ब्राहमणों की राजाई नहीं है। तुम हो ब्राहमण चोटी। पहले शुद्र थे। अभी फिर शुद्र से ब्राहमण बने हो। ड्रामा अनुसार बनना ही है। ब्राहमण न बनेंगे तो पढ़ावेगा कौन। भगवान पढ़ाते हैं ब्राहमणों को। भगवान कब शुद्र को नहीं पढ़ाते। शुद्र देवता नहीं बन सकते। ब्राहमण ही देवता बनते हैं। बाप कहते है मैं आया हूं संगम पर राजाई स्थापन करने। सभी को पवित्र बनाकर सृष्टि के आदि मध्य अन्त का नालेज पढ़ता हूं। यह है बेहद की हिस्ट्री जागराफी। सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक सारा चक्र बुधि में है। इसलिए तुम्हारा नाम पड़ जाता है स्वदर्शनचक्रधारी। जिससे फिर तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। अभी तुमको पता पड़ा है यह कब कैसे बने फिर कहां गये। अभी 84 जन्मों के अन्त के भी अन्त में आ गये हैं। तुम्हारा भी यह अन्तिम जन्म है। आत्माओं का जो बाप है उनको तो आत्मा को जानना चाहिए ना। आत्मा भी अविनाशी है बाप भी अविनाशी है। बाप ही आकर अपनी पहचान देते हैं। तुम किसको कहो भगवान आया है तो कभी नहीं मानेंगे। क्योंकि वह तो समझते हैं कुत्ते बिल्ले में सभी भगवान है। वह फिर आवेंगे कैसे। रावण राज्य में मनुष्य विकारी बन जाते हैं। ग्लानी करते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी है। कुत्ते बिल्ले में हैं। कुछ भी समझ नहीं। बिल्कुल ही बेसमझ बन गये हैं। विकार में गये और बेसमझ शुरू। रावण राज्य में बिल्कुल बेसमझ बन जाते हैं। तब ही बाप आकर समझदार बनाते हैं। फिर 84 जन्मों बाद बेसमझ बन जाते हैं। गोरा और सांवरा श्याम और सुन्दर। काम चिक्षा पर बैठ काले बन जाते हैं। फिर ज्ञान चिक्षा पर बैठ सुन्दर बनते हैं। यह बड़ी समझने की बातें हैं। अगर किसकी बुधि और तरफ होगी तो मुरली के पायन्ट्स बुधि में बैठेंगी नहीं। क्योंकि स्वर्ग की राजाई तकदीर में नहीं है। देवताओं के दुनिया में आने वाले नहीं। छांट छूंट होगी ना। यहां बैठे भी जैसे कि सुनेंगे नहीं। मेहनत करने वालों को ही स्कालरशिप मिलती है। वह होते हैं 8-9 रत्न पहनते हैं ना। बीच में एक है बाबा। बाकी तुम बच्चे। यह है रत्न जो स्वर्ग में पहले2 राजे बनते हैं। जब बृक्षपति आये तब बृक्षपत की दशा बैठे। इस समय रावण राज्य में तो सभी रावण की दशा है। विकारी है। तुम अभी निर्विकारी बनते हो। बृक्षपति बाप द्वारा। तुम्हारे ऊपर बृक्षपति की दशा है। स्कूल में बच्चे बैठते हैं तो उनमें भी दशायें होते हैं। कोई अच्छा इम्तहान पास कर लेते हैं। कोई कम। कोई वकील तो एक एक केस के लाख रुपया कमा लेते हैं। कोई को तो देखो पहनने लिए भी पूरे कपड़े नहीं होते। तो इसमें भी नम्बरवार होते हैं। इम्तहान तो एक ही हैं। यह कोई सतसंग नहीं। यह पाठशाला है। वास्तव में वह सभी सतसंग नहीं। वह लतसंग है। नीचे ही गिराते हैं। सीढी नीचे उतरते ही आये हैं। जूं मिशल। फिर आकर बाप सेकण्ड में चढ़ा देते हैं। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो। मैं गेरन्टी करता हूं। क्योंकि यह है योग अग्नि जिससे पापकटते हैं। बाकी माला आद कुछ भी फेरने की दरकार नहीं। कुछ भी याद न करो। क्योंकि आत्माओं को अभी वापस घर जाना है। मौत पिछाड़ी में खड़ा है। पावन बन पावन दुनिया का पद पावेंगे। नहीं तो पद मिलेगा नहीं। अच्छा। बच्चे जानते हैं कि ज्ञान से सदगति भक्ति से दुर्गति होती हैं। उतरते 2 तुम एकदम पट में पड़ जाते हो तमोप्रधान बन जाते हो। फिर बाप आकर फल देते हैं। पतित होते ही हैं बेसमझ कौड़ी मिशल। पावन होते हैं समझदार हीरे मिशल। अभी फिर आकर बाप हीरे जैसा बनाते हैं। फिर भी तुम भक्ति मार्ग के धक्के क्यों खाते हो। आधा कल्प तुम ने धक्के खाई है। ज्ञान भक्ति फिर है वैराग्य। ज्ञानसे दिन सतयुग त्रेता, फिर होती है भक्ति शुरू रावण राज्य द्वापर कलियुग। फिर चाहिए सारीदुनिया का वैराग्य। बाप कहते हैं पुरानी दुनिया का विनाश सामने खड़ा है। इसलिए विनाश से पहले तुम बेहद के बाप से वर्सा लो। बाप आते हैं तो भक्ति बन्द। फिर होता है ज्ञान। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

::::*